प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 'मन की बात'

मुख्य अंश

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में आप सबका स्वागत है. आज मन की बात की शुरुआत, युवा देश के, युवा, वो गर्म जोशी, वो देशभक्ति, वो सेवा के रंग में रंगे नौजवान, आप जानते हैं ना.

- नवम्बर महीने का चौथा रविवार हर साल NCC Day के रूप में मनाया जाता है. आमतौर पर हमारी युवापीढ़ी को Friendship Day बराबर याद रहता है. लेकिन बहुत लोग हैं जिनको NCC Day भी उतना ही याद रहता है. तो चलिए आज NCC के बारे में बातें हो जाएं. मुझे भी कुछ यादें ताजा करने का अवसर मिल जाएगा. सबसे पहले तो NCC के सभी पूर्व और मौजूदा Cadet को NCC Day की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं. क्योंकि मैं भी आप ही की तरह Cadet रहा हूं और मन से भी, आज भी अपने आपको Cadet मानता हूं. Leadership, देशभक्ति, selfless service, discipline, hard-work इन सबको अपने character का हिस्सा बना लें, अपनी habits बनाने की एक रोमांचक यात्रा मतलब - NCC.
- 7 दिसम्बर को Armed Forces Flag Day मनाया जाता है. ये वो दिन है जब हम अपने वीर सैनिकों को, उनके पराक्रम को, उनके बलिदान को याद तो करते ही हैं लेकिन योगदान भी करते हैं. सिर्फ सम्मान का भाव इतने से बात चलती नहीं है. सहभाग भी जरूरी होता है और 07 दिसम्बर को हर नागरिक को आगे आना चाहिए. हर एक के पास उस दिन Armed Forces का Flag होना ही चाहिए और हर किसी का योगदान भी होना चाहिए. आइये, इस अवसर पर हम अपनी Armed Forces के अदम्य साहस, शौर्य और समर्पण भाव के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करें और वीर सैनिकों का स्मरण करें.
- मैं देश के सभी राज्यों के school board एवं school प्रबंधन से अपील करता हूं. कि हर school में, दिसम्बर महीने में, Fit India सप्ताह मनाया जाए. इससे fitness की आदत हम सभी की दिनचर्या में शामिल होगी. Fit India Movement में fitness को लेकर स्कूलों की ranking की व्यवस्था भी की गई है. इस ranking को हासिल करने वाले सभी school, Fit India logo और flag का इस्तेमाल भी कर पाएंगे. Fit India portal पर जाकर school स्वयं को Fit घोषित कर सकते हैं. Fit India three star और Fit India five star ratings भी दी जाएगी. मैं अनुरोध करता हूं कि सभी school, Fit India ranking में शामिल हों और Fit India सहज स्वभाव बने. एक जनांदोलन बने. जागरूकता आए. इसके लिए प्रयास करना चाहिए.
- कुछ दिन पहले MyGov पर एक comment पर मेरी नजर पड़ी. ये comment असम के नौगांव के श्रीमान रमेश शर्मा जी ने लिखा था. उन्होंने लिखा ब्रह्मपुत्र नदी पर एक उत्सव चल रहा है. जिसका नाम है ब्रह्मपुत्र पुष्कर. 04 नवम्बर से 16 नवम्बर तक ये उत्सव था और इस ब्रह्मपुत्र पुष्कर में शामिल होने के लिए देश के भिन्न-भिन्न भागों से कई लोग वहां पर शामिल हुए हैं. ये सुनकर आपको भी आश्चर्य हुआ ना. हां यही तो बात है ये ऐसा महत्वपूर्ण उत्सव है और हमारे पूर्वजों ने इसकी ऐसी

रचना की है कि जब पूरी बात सुनोगे तो आपको भी आश्चर्य होगा. लेकिन दुर्भाग्य से इसका जितना व्यापक प्रचार होना चाहिए. जितनी देश के कोने-कोने में जानकारी होनी चाहिए, उतनी मात्रा में नहीं होती है. और ये भी बात सही है इस पूरा आयोजन एक प्रकार से एक देश-एक सन्देश और हम सब एक हैं. उस भाव को भरने वाला है, ताकत देने वाला है.

- सबसे पहले तो रमेशजी आपका बहुत बहुत धन्यवाद कि आपने 'मन की बात' के माध्यम से देशवासियों के बीच ये बात शेयर करने का निश्चय किया. आपने पीड़ा भी व्यक्त की है कि है इतनी महत्वपूर्ण बात की कोई व्यापक चर्चा नहीं होती है, प्रचार नहीं होता है. आपकी पीड़ा मैं समझ सकता हूं. देश में ज्यादा लोग इस विषय में नहीं जानते हैं. हां, अगर शायद किसी ने इसको International River festival कह दिया होता, कुछ बड़े शानदार शब्दों का उपयोग किया होता, तो शायद, हमारे देश में कुछ लोग हैं जो ज़रूर उस पर कुछ न कुछ चर्चाएं करते और प्रचार भी हो जाता.
- मेरे प्यारे देशवासियो पुष्करम, पुष्करालू, पुष्करः क्या आपने कभी ये शब्द सुने हैं, क्या आप जानते हैं आपको पता है ये क्या है, मैं बताता हूं यह देश कि बारह अलग-अलग नदियों पर जो उत्सव आयोजित होते हैं उसके भिन्न- भिन्न नाम हैं. हर वर्ष एक नदी पर यानी उस नदी का नंबर फिर बारह वर्ष के बाद लगता है, और यह उत्सव देश के अलग-अलग कोने की बारह नदियों पर होता है, बारी- बारी से होता है और बारह दिन चलता है कुम्भ की तरह ही ये उत्सव भी राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देता है और 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के दर्शन कराता है. पुष्करम यह ऐसा उत्सव है जिसमें नदी का महत्मय, नदी का गौरव, जीवन में नदी की महत्ता एक सहज रूप से उजागर होती है!
- हमारे पूर्वजों ने प्रकृति को, पर्यावरण को, जल को, जमीन को, जंगल को बहुत अहमियत दी. उन्होंने नदियों के महत्व को समझा और समाज को नदियों के प्रति सकारात्मक भाव कैसा पैदा हो, एक संस्कार कैसे बने, नदी के साथ संस्कृति की धारा, नदी के साथ संस्कार की धारा, नदी के साथ समाज को जोड़ने का प्रयास ये निरंतर चलता रहा और मजेदार बात ये है कि समाज नदियों से भी जुड़ा और आपस में भी जुड़ा. पिछले साल तमिलनाडु के तामीर बरनी नदी पर पुष्करम हुआ था. इस वर्ष यह ब्रह्मपुत्र नदी पर आयोजित हुआ और आने वाले साल तुंगभद्रा नदी आंध्रप्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक में आयोजित होगा. एक तरह से आप इन बारह स्थानों की यात्रा एक Tourist circuit के रूप में भी कर सकते हैं. यहां मैं असम के लोगों की गर्मजोशी उनके आतिथ्य की सराहना करना चाहता हूं जिन्होंने पूरे देश से आये तीर्थयात्रियों का बहुत सुन्दर सत्कार किया.
- मेरे युवा-मित्र, मुझे, जिस अधिकार और स्नेह के साथ शिकायत करते हैं, आदेश देते हैं, सुझाव देते हैं - यह देख कर मुझे बहुत खुशी होती है. श्वेता जी, आपने बहुत ही सही समय पर इस विषय को उठाया है. परीक्षाएं आने वाली हैं, तो, हर साल की तरह हमें परीक्षा पर चर्चा भी करनी है. आपकी बात सही है इस कार्यक्रम को थोड़ा पहले आयोजित करने की आवश्यकता है!
- साथियो, पिछले 'मन की बात' में हमने 2010 में अयोध्या मामले में आये इलाहाबाद हाई कोर्ट के Judgement के बारे में चर्चा की थी, और, मैंने कहा था कि देश ने तब किस तरह से शांति और भाई-चारा बनाये रखा था. निर्णय आने के पहले भी, और, निर्णय आने के बाद भी. इस बार भी, जब, 9 नवम्बर को सुप्रीम कोर्ट का Judgement आया, तो 130 करोड़ भारतीयों ने, फिर से ये साबित कर दिया कि उनके लिए देशहित से बढ़कर कुछ नहीं है. देश में, शांति, एकता और सद्भावना के मूल्य सर्वोपरि हैं. मेरे प्यारे देशवासियो, हमारी सभ्यता, संस्कृति और भाषाएं पूरे विश्व को, विविधता में, एकता का संदेश देती हैं. 130 करोड़ भारतीयों का ये वो देश है, जहां कहा जाता था, कि, 'कोस-कोस पर पानी बदले और चार कोस पर वाणी'.
- भारत भूमि पर सैकड़ों भाषाएं सदियों से पुष्पित पल्लवित होती रही हैं. हालांकि, हमें इस बात की भी चिंता होती है कि कहीं भाषाएं और बोलियां ख़त्म तो नहीं हो जाएंगी! पिछले दिनों, मुझे, उत्तराखंड के धारचुला की कहानी पढ़ने को मिली. मुझे काफी संतोष मिला. इस कहानी से पता चलता है कि किस प्रकार लोग अपनी भाषाओं, उसे बढ़ावा देने के लिए, आगे आ रहें है. कुछ, Innovative कर रहें हैं धारचुला खबर मैंने, मेरा, ध्यान भी, इसलिए गया कि किसी समय, मैं, धारचूला में आते-जाते रुका करता था. उस पार नेपाल, इस पार कालीगंगा - तो स्वाभाविक धारचूला सुनते ही, इस खबर पर, मेरा ध्यान गया. पिथौरागढ़ के धारचूला में, रंग समुदाय के काफ़ी लोग रहते हैं, इनकी, आपसी बोल-चाल की भाषा रगलो है. ये लोग इस बात को सोचकर अत्यंत दुखी हो जाते थे कि इनकी भाषा बोलने वाले लोग लगातार कम होते जा रहे हैं - फिर क्या था, एक दिन, इन सबने, अपनी भाषा को बचाने का संकल्प ले लिया. देखते-ही-देखते इस मिशन में रंग समुदाय के लोग जुटते चले गए. आप हैरान हो जायेंगे, इस समुदाय के लोगों की संख्या, गिनती भर की है. मोटा-मोटा अंदाज़ कर सकते हैं कि शायद दस हज़ार हो, लेकिन, रंग भाषा को बचाने के लिए हर कोई जुट गया, चाहे, चौरासी साल के बुज़ुर्ग दीवान सिंह हों या बाईस वर्ष की युवा वैशाली गर्ब्याल प्रोफेसर हों या व्यापारी, हर कोई, हर संभव कोशिश में लग गया. इस मिशन में, सोशल मिडिया का भी भरपूर प्रयोग किया गया. कई Whatsapp group बनाए गए. सैकड़ों लोगों को, उस पर भी, जोड़ा गया. इस भाषा की कोई लिपि नहीं है. सिर्फ, बोल-चाल में ही एक प्रकार से इसका चलन है. ऐसे में, लोग कहानियां, कवितायें और गाने पोस्ट करने लगे. एक-दूसरे की भाषा ठीक करने लगे. एक प्रकार से Whatsapp ही classroom बन गया जहां हर कोई शिक्षक भी है.
- एक और ख़ास बात ये भी है कि संयुक्त राष्ट्र ने 2019 यानी इस वर्ष को 'International Year of Indigenous Languages' घोषित किया है. यानी उन भाषाओं को संरक्षित करने पर जोर दिया जा रहा है जो विलुप्त होने के कगार पर हैं.
- media में ही scuba divers की एक story पढ़ रहा था. एक ऐसी कहानी है जो हर भारतवासी को प्रेरित करने वाली है. विशाखापत्तनम में गोताखोरी का प्रशिक्षण देने वाले scuba divers एक दिन mangamaripeta beach पर समुद्र से लौट रहे थे तो समुद्र में तैरती हुई कुछ प्लास्टिक की बोतलों और pouch से टकरा रहे थे. इसे साफ़ करते हुए उन्हें मामला बड़ा गंभीर लगा. हमारा समुद्र किस प्रकार से कचरे से भर दिया जा रहा है. पिछले कई दिनों से ये गोताखोर समुद्र में, तट के, करीब 100 मीटर दूर जाते हैं, गहरे पानी में गोता लगाते हैं और फिर वहां मौजूद कचरे को बाहर निकालते हैं. और मुझे बताया गया है कि 13 दिनों में ही, यानी 2 सप्ताह के भीतर-भीतर, करीब-करीब 4000 किलो से अधिक plastic waste उन्होंने समुद्र से निकाला है. इन scuba divers की छोटी-सी शुरुआत एक बड़े अभियान का रूप लेती जा रही है. इन्हें अब स्थानीय लोगों की भी मदद मिलने लगी है. आस-पास के मछुआरे भी उन्हें हर प्रकार की सहायता करने लगे हैं. जरा सोचिये, इस scuba divers से प्रेरणा लेकर, अगर, हम भी, सिर्फ अपने आस-पास के इलाके को प्लास्टिक के कचरे से मुक्त करने का संकल्प कर लें तो फिर 'प्लास्टिक मुक्त भारत' पूरी दुनिया के लिए एक नई मिसाल पेश कर सकता है.
- 26 नवम्बर का दिन पूरे देश के लिए बहुत ख़ास है. हमारे गणतंत्र के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इस दिन को हम 'संविधान दिवस' के रूप में मनाते हैं. भारत का संविधान ऐसा है जो प्रत्येक नागरिक के अधिकारों और सम्मान की रक्षा करता है और यह हमारे संविधान निर्माताओं की दूरदर्शिता की वजह से ही सुनिश्चित हो सका है. मैं कामना करता हूं कि 'संविधान दिवस' हमारे संविधान के आदर्शों को कायम रखने और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने की हमारी प्रतिबद्धता को बल दे. आखिर! यही सपना तो हमारे संविधान निर्माताओं ने देखा था.

-पसूका